प्रतिपूर्ति

ये अपने प्रतिरूप

आगे-पीछे लिखी गई चीजें होंगी । कुछ बातें संबद्ध भी जान पड़ती थीं और समझ में आ जाती थीं । चिकित्सा विज्ञान में खोज की दृष्टि से उपयोगी हो सकने वाले कुछ पृष्ठों की मैंने नकल कर ली । डायरी की एक भी बेतुकी बात को मैंने नहीं बदला, बस नाम बदल दिए हैं, हालाँकि दूर देहात के उन लोगों को जानता भी कौन है । शीर्षक स्वयं लेखक का ही दिया हुआ है । यह दिमाग ठिकाने आ जानें पर ही दिया होगा । मैंने उसे नहीं बदला ।

1

आज रात चाँद खूब उजला है ।

तीस वर्ष हो गए, चाँद को नहीं देख पाया । इसलिए आज चाँदनी में मन में उत्साह उमड़ता जा रहा है । आज अनुभव कर रहा हूँ कि बीते तीस वर्ष अंधकार में ही बिता दिए ; परंतु अब बहुत चौकस रहना होगा । अवश्य कोई बात है । वरना चाओ परिवार का कुत्ता भला दो बार मेरी ओर क्यों घूरता ?

हाँ, समझता हूँ, मेरी आशंका अकारण नहीं है ।

2

आज अँधेरी रात है । चाँद का कहीं पता नहीं । लक्षण शुभ नहीं है । आज सुबह बाहर गया तो बहुत सावधान था । चाओ साहब ने मेरी ओर ऐसे देखा मानो मुझे देखकर डर गए हों, मानो मेरा खून करना चाहते हों । सात-आठ दूसरे लोग भी थे । एक-दूसरे से फुसफुसाकर मेरी बात कर रहे थे और मेरी नजर से बचने की कोशिश कर रहे थे । जितने लोग मिले सबका वही हाल था । उनमें जो सबसे डरावना था, मुझे देखते ही दाँत निकालकर हँसने लगा । मैं सिर से पाँव तक काँप उठा । समझ गया, इन लोगों ने सब तैयारी कर ली है ।

मैं डरा नहीं, अपनी राह चलता गया । कुछ बच्चे आगे-आगे जा रहे थे । वे भी मेरी ही बात कर रहे थे । उनकी नजरें चाओ साहब की ही तरह थीं और चेहरे डर से जर्द पड़ गए थे । सोच रहा था, मैंने इन लड़कों का क्या बिगाड़ा है । ये क्यों मुझसे खफा हैं ? रहा नहीं गया तो मैं पुकार उठा, "क्यों क्या बात है ?" मगर तब वे सब भाग गए ।

कुछ समझ नहीं पाता कि चाओ साहब से मेरा क्या झगड़ा है । राह चलते लोगों का मैंने कब क्या बिगाड़ा है ? बस इतना याद है कि बीस वर्ष पहले कू च्यू[1] साहब की वर्षों पुरानी बही पर मेरा पाँव पड़ गया था और कू साहब बहुत नाराज हो गए थे । पर कू का चाओ से क्या मतलब ? एक-दूसरे को पहचानते भी नहीं । हो सकता है, चाओ ने इस बारे में किसी से सुन लिया हो और मुझसे उसका बदला लेने की ठान ली हो । वह राह चलते लोगों को मेरे विरुद्ध भड़काते रहते हैं ; पर इन बच्चों को इस सबसे क्या मतलब ? ये लोग तो तब पैदा भी नहीं हुए थे । ये लोग मुझे ऐसे घूर-घूर कर क्यों देखते हैं ? मानो डरे हुए हों, मेरा खून कर देने की घात में हों । बहुत घबराहट होती है । क्या करूँ ? अजब परेशानी है ।

मैं समझता हूँ । इन लोगों ने यह सब जरूर अपने माँ-बाप से सीख लिया होगा !

3

रात में नींद नहीं आती । बिना अच्छी तरह सोचे-विचारे कोई भी बात समझ में नहीं आ सकती ।

इन लोगों को देखो—कई लोगों को मजिस्ट्रेट कठघरे में बंद करवा चुका है ; बहुत से लोग आस-पास के अमीर-उमरावों से मार खा चुके हैं ; बहुतों की बीवियों को सरकारी अमले के लोग छीन ले गए हैं ; कइयों के माँ-बाप साहूकारों से परेशान होकर गले में फाँसी लगाकर आत्महत्या कर चुके हैं । पर इन सब बातों को याद करके भी इन लोगों की आँखों में कभी इतना खून नहीं उतरा होगा, इन्हें कभी इतना गुस्सा नहीं आया होगा जितना कि कल देखने में आया ।

उस औरत को क्या कहूँ ? कल गली में अपने लड़के को पीट-पीट कर चीख रही थी, "बदमाश कहीं का ! तेरी चमड़ी उधेड़ दूँगी ! तेरी बोटी-बोटी काट डालूँगी ! तूने मेरा कलेजा जला दिया !" वह बार-बार मेरी तरफ देखने लगती थी । मैं काँप उठा । बड़ी घबराहट हुई । क्रूर चेहरे, लंबे-लंबे दाँतों वाले लोग हँसने लगे । बुजुर्ग छन झट आगे बढ़ आया और मुझे पकड़कर घर ले आया ।

छन मुझे घर लिवा लाया । सब लोग ऐसे बन गए मानो पहचानते ही न हों । मैंने उनकी आँखें पहचानीं । उनकी नजरों में भी वही गली के लोगों वाली बात थी । मैं अध्ययन कक्ष में आ गया तो उन्होंने झट दरवाजा बंद कर दिया और साँकल लगा दी, जैसे मुर्गी या बत्तख को दरबे में बंद कर दिया गया हो । मैं और भी परेशान हो गया ।

कुछ दिन पहले की बात है । शिशु-भेड़िया गाँव से हमारा एक असामी फसल के चौपट होने की खबर देने आया था । उसने मेरे बड़े भाई को बताया कि गाँव के सब लोगों ने मिलकर देहात के एक बदनाम दिलेर गुंडे को घेर लिया और मार-मार कर उसका काम तमाम कर दिया । कुछ लोगों ने उसका सीना फाड़कर दिल और कलेजा निकाल लिया, उन्हें तेल में तला और बाँटकर खा गए कि उनका भी हौसला बढ़ जाए । मुझसे रहा नहीं गया और मैं बोल पड़ा । भैया और असामी दोनों मुझे घूरने लगे । बिलकुल ऐसे ही घूर रहे थे जैसे आज सड़क पर लोगों की नजरें ।

यह सब सोचकर एड़ी से चोटी तक सारा बदन सिहर उठता है । ये लोग आदमखोर हैं, ये मुझे भी खा सकते हैं ।

याद आया, वह औरत कह रही थी, "तेरी बोटी-बोटी काट डालूँगी !" क्रूर चेहरों पर लंबे दाँत निकाले लोग हँस रहे थे, और उस असामी ने जो कहानी सुनाई,.....ये सब गुप्त संकेत हैं । इन लोगों की बातों में कितना विष भरा है । इनकी हँसी खंजर की धार की तरह काटती है । इनके ये लंबे-लंबे सफेद दाँत आदमियों के हाड़-मांस चबा-चबा कर चमक गए हैं । ये सब आदमखोर हैं ।

और उसकी खाल को बिछावन बना लें !'' तब मेरी उम्र कच्ची थी । सुनकर दिल देर तक ध ड़कता रहा । जब शिशु-भेड़िया गाँव के असामी ने एक बदमाश का कलेजा निकालकर खा जाने की बात कही थी तब भी भैया को कुछ बुरा नहीं लगा था । सुनकर चुपचाप सिर हिलाते रहे थे, जैसे ठीक ही हुआ हो । मुझसे छिपा क्या है, वे तो पहले की ही तरह खूँखार हैं । चूँकि ''बेटों को एक-दूसरे से बदलकर उन्हें खा जाना'' संभव है, तो फिर हर चीज को बदला जा सकता है, हर किसी को खाया जा सकता है । उन दिनों भैया जब ऐसी बातें समझाते थे तो मैं सुन लेता था, सोचता नहीं था । पर अब खूब समझ में आता है कि ऐसी बातें कहते समय उनके मुँह में नर-मांस का स्वाद भर आता होगा और उनका मन मनुष्य को खाने के लिए व्याकुल हो उठता होगा ।

6

घना अँधेरा है । जान नहीं पड़ता रात है या दिन । चाओ परिवार का कुत्ता फिर भौंक रहा है ।

बबरशेर की तरह खूँखार, खरहे की तरह कातर, लोमड़ी की तरह धूर्त ।.....

7

मैं उन लोगों को खूब जानता हूँ । किसी को एकदम मार डालने को ये तैयार नहीं हैं । ऐसा कर सकने का साहस इन लोगों में नहीं है । परिणाम के भय से इनकी जान निकलती है, इसलिए ये लोग षड्यंत्र रचकर जाल बिछा रहे हैं, मुझे आत्महत्या कर लेने के लिए विवश कर रहे हैं । कुछ दिनों से गली के पुरुषों और स्त्रियों का बर्ताव देख रहा हूँ और बड़े भाई का रंग-ढंग भी देख रहा हूँ । मैं सब समझता हूँ । ये लोग तो चाहते हैं कि कोई घर की धन्नी से फंदा लगाकर इनके लिए मर जाए । कत्ल के लिए कोई उन पर उँगली न उठा सके और ये लोग जी भरकर खाएँ । ये लोग इसी बात की कल्पना करके खुशी से फूले नहीं समा रहे । चाहे कोई आदमी चिंता और संकट से सूख-सूख कर आत्महत्या कर ले और उसके शरीर में रक्त-मांस कुछ भी न रहे, ये लोग उसे भी खाने के लिए लालायित रहते हैं ।

ये लोग केवल मुरदार गोश्त खाते हैं ! याद आता है, एक घिनौने जानवर के बारे में पढ़ा है । उसकी आँखें डरावनी होती हैं । हाँ, उसे लकड़बग्घा कहते हैं । लकड़बग्घा अक्सर मुरदार गोश्त खाता है । मोटी-से-मोटी हड्डी दाँतों में चबाकर निगल जाता है । ख्याल आते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं । लकड़बग्घे की जाति भेड़िए से मिलती है और भेड़िया कुत्ते की जाति का होता है । मालूम होता था वह कुत्ता भी षड्यंत्र में शामिल है । बूढ़ा हकीम नजरें झुकाए था, पर मैं तो ताड़ गया !

सबसे अधिक दुख तो मुझे अपने बड़े भाई के लिए है । वह भी तो आदमी है, उसे डर क्यों नहीं लगता । मुझे खा डालने के लिए वह भी दूसरों के साथ क्यों मिल गया है ! शायद जो

होता चला आया है उसे करते जाने में लोग अपराध और दोष नहीं समझते । या मेरा भाई जानता है कि यह अपराध है, पाप है, पर उसने पाप करने के लिए अपना दिल पत्थर-सा बना लिया है ?

सबसे पहले मैं इसी आदमखोर का भंडाफोड़ करूँगा । सबसे पहले इसी को पाप से रोकूँगा ।

8

वास्तव में तो यह तर्क बहुत पहले ही मान लिया जाना चाहिए था ।.....

अचानक कोई भीतर आ गया । यही बीस-एक वर्ष का नौजवान होगा । चेहरा उसका ठीक-ठीक नहीं देख सका । उस पर मुस्कराहट खेल रही थी । लेकिन जब उसने गर्दन झुकाकर मेरा अभिवादन किया तो उसकी मुस्कराहट बनावटी-सी लगी । मैंने पूछ ही लिया, "बताओ, नर-मांस खाना उचित है ?"

वह मुस्कराता रहा और बोला, "क्या कहीं अकाल पड़ा है, नर-मांस कोई क्यों खाएगा ?"

मैं भाँप गया, यह भी उन्हीं के दल का था । मैंने साहस किया और फिर कहा,

"मेरी बात का उत्तर दो !"

"आखिर इस प्रश्न का मतलब क्या है ?..... क्या मजाक कर रहे हो ?..... कितना सुहावना मौसम है !"

"हाँ मौसम अच्छा है, चाँदनी खूब उजली है । पर तुम मेरी बात का जवाब दो, क्या यह उचित है ?"

वह कुछ परेशान हो गया और बोला, "नहीं ।....."

"नहीं ? तो फिर लोग ऐसा क्यों करते हैं ?"

"तुम्हारा मतलब क्या है ?"

"मेरा मतलब ? शिशु-भेड़िया गाँव में लोग नर-मांस खा रहे हैं । तुम पोथियाँ-ग्रंथ उठाकर देख लो । सब जगह यही लिखा है, ताजा लाल-लाल अक्षरों में ।"

वह गुमसुम रह गया । उसका चेहरा पीला पड़ गया । मेरी ओर घूरकर बोला, "होगा, सदा से ही होता आया है ।....."

"मैं इस बहस में नहीं पड़ना चाहता । तुम्हें भी इन फिजूल के झगड़ों में नहीं पड़ना चाहिए । ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए ।"

मैं झट से उछल पड़ा, आँखें फाड़कर इधर-उधर देखने लगा । वह आदमी गायब हो गया था । मैं पसीना-पसीना हो रहा था । नौजवान की उम्र मेरे भाई से बहुत कम थी, मगर वह भी उन लोगों के साथ था । अपने माँ-बाप से सब सीख लिया है उसने, भगवान जाने, अपने बेटे को भी सिखा चुका होगा ! तभी तो ये जरा-ज़रा से छोकरे मुझे यों घूर-घूर कर देखते हैं ।

छन दादा ने सब लोगों को भगा दिया । भैया चले गए थे । छन ने मुझे अपने कमरे में जाने को कहा । कमरे में घुप्प अँधेरा था । सिर के ऊपर छत की धन्नियाँ और कड़ियाँ थिरकती जान पड़ रही थीं । उनका आकार बढ़ता जा रहा था । कुछ पल ऐसे ही खड़खड़ाहट होती रही । फिर छत मुझ पर आ गिरी ।

छत के बोझ के नीचे हिल सकना संभव नहीं था । वे लोग तो चाहते ही थे कि मैं मर जाऊँ । मैं जानता था कि यह बोझ महज ख्याली ही है । इसलिए हिम्मत बाँधी, कंधा लगाया और बाहर निकल आया ! मैं पसीना-पसीना हो रहा था, परंतु फिर भी बोले बिना नहीं रह सका – "तुम्हें तुरंत बदलना होगा ! अपना मन बदलना होगा ! याद रखो, भविष्य में दुनिया में आदमखोरी नहीं चल सकेगी ।"

11

कोठरी का दरवाजा बंद रहता है । कभी धूप नहीं दिखाई देती । रोजाना दो बार खाना मिल जाता है ।

मैंने खाना खाने को चापस्टिकें उठाईं तो भैया का ख्याल आ गया, अपनी छोटी बहन की मृत्यु की घटना याद आ गई । वह भैया की ही करतूत थी । तब मेरी बहन केवल पाँच वर्ष की थी । कितनी प्यारी और निरीह थी वह ! याद आती है तो चेहरा आँखों के सामने घूम जाता है । माँ रो-रो कर बेहाल हो रही थीं । भैया माँ को सांत्वना देकर समझा रहे थे, कारण शायद यह था कि स्वयं ही बेचारी को खा गए थे इसलिए माँ को इस तरह रोते देखकर उन्हें शर्म आ रही थी । अगर उनमें शर्म होती.....

भैया मेरी बहन को खा गए थे ! नहीं मालूम माँ यह भेद जान सकी थीं या नहीं ।

मेरा तो ख्याल है कि माँ सब जानती थीं, पर जब माँ रो रही थीं तो उन्होंने साफ-साफ कुछ भी नहीं कहा था । शायद यह सोचकर चुप रही थीं कि कहने की बात नहीं थी । एक घटना और याद है । तब मेरी उम्र चार या पाँच वर्ष रही होगी । मैं आँगन में छाँह में बैठा हुआ था । भैया ने कहा था – एक सपूत का कर्त्तव्य है कि अपने माता-पिता के बीमार होने पर उनकी औषधि के लिए यदि जरूरत हो तो अपने शरीर का मांस भी काटकर और उबालकर प्रस्तुत कर दे । माँ उनकी बात सुनकर समर्थन में चुप रह गई थीं, उन्होंने कोई विरोध नहीं किया था । अगर नर-मांस का एक टुकड़ा खाया जा सकता है तो पूरे आदमी को भी खाया जा सकता है । और जब माँ के शोक और रुदन की याद आती है तो कलेजा टुकड़े-टुकड़े होने लगता है । कितने निराले ढंग हैं इन लोगों के !

12

उसे याद करते ही, सोचते ही, रोंगटे खड़े हो जाते हैं । सिर चकरा जाता है ।

आखिर यह बात समझ में आई कि उम्रभर से ऐसे लोगों के बीच रह रहा हूँ जो चार हजार

वर्षों से नर-मांस का आहार करते आ रहे हैं । बड़े भैया ने अभी घर सँभाला था कि कुछ दिन बाद छोटी बहन की मृत्यु हो गई । इन्होंने उसके मांस का उपयोग किया ही होगा, पुलाव में या दूसरी तरह । बेखबरी में हम लोग भी खा गए होंगे ।

संभव है, अनजाने में मैंने अपनी बहन के मांस के टुकड़े खा लिए लिए हों, और अब मेरी बारी आई है ।.....

मैं भले ही बेखवर रहा हूँ, मेरे पुरखे चार हजार वर्ष से आदमखोर रहे हैं । मेरे जैसा आदमी किसी सभ्य, वास्तविक मानव को अपना मुँह कैसे दिखा सकता है ?

13

संभव है नई पीढ़ी के छोटे बच्चों ने अभी नर-मांस न खाया हो । इन बच्चों को तो बचा लें ! .....

❑❑❑

शब्द-संदर्भ

1. कू च्यू का अर्थ है 'प्राचीन काल' । लू शुन का संकेत यहाँ चीन में सामंती उत्पीड़न के दीर्घकालीन इतिहास की तरफ है ।
2. एक प्रसिद्ध चीनी औषधि वैज्ञानिक (1518-1593) जिन्होंने 'पनछाओकाङमू' नामक औषधि ग्रंथ की रचना की थी ।
3. प्राचीन अभिलेखों के अनुसार ई या ने अपने बेटे का गोश्त छी राज्य के राजा ह्वान को, जिसने ईसा पूर्व 685 से 643 तक शासन किया, परोस दिया था । च्ये और चओ पहले के जमाने के निरंकुश शासक थे । यहाँ पागल आदमी ने गलती से उनका उल्लेख कर दिया है ।
4. छिङ राजवंश (1644-1911) के अंतिम काल में एक क्रांतिकारी खीशी-लिन को 1907 में एक छिङ अफसर की हत्या के आरोप में मौत की सजा दी गई थी । उनके दिल और जिगर का गोश्त खाया गया था ।

माँ की बाँहों में : वांग दतोंग